नवम माला, खंड 1, अंक 2

मंगलवार, 19 दिसम्बर, 1989

28 अग्रहायण, 1911 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद
का
हिन्दी संस्करण

पहला सत्र

(नौवीं लोक सभा)

सत्यमेव जयते

PARLIAMENT LIBRARY
No. 62
Date 26-11-9

(खंड 1 में अंक 1 से 9 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्य: चार रुपये

[अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जायेगी। उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जायेगा।]

विषय-सूची

नवम माला, खंड 1, पहला सत्र, 1989 / 1911 (शक)

अंक 2, मंगलवार, 19 दिसम्बर, 1989 / 28 अग्रहायण, 1911 (शक)

विषय	पृष्ठ
सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण	1-2
अध्यक्ष का निर्वाचन	3-5
अध्यक्ष महोदय को बधाइयां	5-16
श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह	5
श्री राजीव गांधी	6
श्रीमती विजया राजे सिंधिया	6
श्री सोमनाथ चटर्जी	6
श्री इन्द्रजीत गुप्त	7
श्री कादम्बुर एम॰ आर॰ जर्नादनन्	7
श्री नानी भट्टाचार्य	8
श्री चित बसु	8
प्रो॰ सैफुद्दीन सोज	9
श्री इब्राहीम सुलेमान सेट	9
श्री पी॰ सी॰ थामस	10
श्री वामनराव महाडीक	10
श्री सुल्तान सलाउद्दीन ओवेसी	11
श्री शंकरजी लक्ष्मणजी वाघेला	12
श्री महादेव राव शिवंकर	12
डा॰ खुशाल परशराम बोपचे	13
श्री हरिभाऊ शंकर महाले	13
श्री इन्द्रजीत	13
श्री पी॰ उपेन्द्र	14
अध्यक्ष महोदय	14

लोक सभा

मंगलवार, 19 दिसम्बर, 1989 / 28 अग्रहायण, 1911 (शक)

लोक सभा 11 बजे म० पू० पर समवेत हुई।

[सामयिक अध्यक्ष महोदय (प्रो० एन० जी० रंगा) पीठासीन हुए]

सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण

[अनुवाद]

सामयिक अध्यक्ष महोदय: महासचिव उन सदस्यों के नाम पुकारें, जिन्हें शपथ लेनी है अथवा प्रतिज्ञान करना है।

श्री मुफ्ती मोहम्मद सईद (मुजफ्फरनगर)
श्री जनार्दन तिवारी (सीवन)
श्री हरि किशोर सिंह (शिवहर)
श्री एम० वी० चन्द्रशेखर मूर्ति (कनकपुरा)
प्रो० पी० जे० कुरियन (मवेलीकारा)
श्री मोहनलाल (मण्डला)
श्री कमलनाथ (छिन्दवाड़ा)
श्री दामोदर बारकू शिंगडा (दहानू)
श्री थोरट सन्दीपन भगवान (पंढरपुर)
श्री गडाख यशवन्तराव कानकरराव (अहमदनगर)
श्री गिरिधर गोमांगो (कोरापुट)
श्री कमल चौधरी (होशियारपुर)
श्री गिरधारी लाल भार्गव (जयपुर)
श्री जसवन्त सिंह (जोधपुर)
श्री नन्दू थापा (सिक्किम)
श्री ब्रह्मदत्त (टिहरी गढ़वाल)
श्री एस० पी० यादव (सम्भल)
श्री सत्य पाल सिंह (शाहजहांपुर)
श्री राम सिंह (सुल्तानपुर)
श्री राम अवध (अकबरपुर)
श्री मित्र सेन यादव (फैजाबाद)
श्री फसीउर्रहमान उर्फ मुन्नां खां (बलरामपुर)

श्री अवेद्यनाथ (गोरखपुर)

श्री हर्षवर्धन (महाराजगंज)

श्री हरिकेवल (सलेमपुर)

श्री चन्द्रशेखर (बलिया)

श्री अनिल शास्त्री (वाराणसी)

श्री यूसुफ बेग (मिर्जापुर)

श्री राम संजीवन (बांदा)

श्री गंगा चरण (हमीरपुर)

श्री राजेन्द्र अग्निहोत्री (झांसी)

श्री राम सेवक भाटिया (जालौन)

श्रीमती सुभाषिनी अली (कानपुर)

श्री संतोष भारतीय (फर्रूखाबाद)

चौधरी मुलतान सिंह (जलेसर)

श्री रामजीलाल सुमन (फिरोजाबाद)

श्री अजय सिंह (आगरा)

श्री सत्यपाल मलिक (अलीगढ़)

श्री भगवान दास (खुर्जा)

श्री किशन चन्द त्यागी (हापुड़)

श्री हरीश पाल (मेरठ)

श्री हरपाल (कैराना)

श्री इन्द्रजीत (दार्जिलिंग)

श्री पलाश बर्मन (बलूरघाट)

श्री अब्दुल बरकत अतूल गनी खां चौधरी (मालदा)

श्री मनोरंजन सुर (बसीरहाट)

श्रीमती गीता मुखर्जी (पंसकुरा)

श्री सालागाला बेंजामिन (बापतला)

श्री गणेन्द्र रेड्डी (चित्तूर)

12.00 मध्याह्न

श्री वाई॰ एस॰ राजाशेखर रेड्डी (कुड्डापाह)

श्री साईमन मरांडी (राजमहल)

श्री शैलेन्द्र महतो (जमशेदपुर)

श्री सी॰ के॰ जाफर शरीफ (बंगलौर उत्तर)

श्री पुरोहित बनवारीलाल भगवानदास (नागुपर)

श्री पी॰ चिदम्बरम (शिवगंगा)

श्री हर गोविन्द (अमरोहा)

सामयिक अध्यक्ष महोदय: क्या कोई और सदस्य है, जो शपथ लेना चाहते हैं? .....कोई नहीं है, अब हम अध्यक्ष के चुनाव हेतु प्रस्ताव को लेते हैं।

12.10 म० प०

अध्यक्ष का निर्वाचन

[अनुवाद]

सामयिक अध्यक्ष महोदय: अब श्री देवीलाल अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करें।

[हिन्दी]

उप प्रधान मंत्री और कृषि मंत्री (श्री देवी लाल): स्पीकर साहब, आपकी इजाजत से मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री रवि राय, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा का अध्यक्ष चुना जाये।"

[अनुवाद]

सामयिक अध्यक्ष महोदय: श्री मनुभाई कोटाड़िया प्रस्ताव का अनुमोदन करें।

[हिन्दी]

जल संसाधन मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री मनुभाई कोटाड़िया): मान्यवर, चौधरी देवी लाल जी ने जो प्रस्ताव किया है, मैं उसका समर्थन करता हूं।

[अनुवाद]

सामयिक अध्यक्ष महोदय: प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

सामयिक अध्यक्ष महोदय: अब श्री शरद यादव अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करें।

[हिन्दी]

वस्त्र मंत्री और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री (श्री शरद यादव): मान्यवर, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री रवि राय, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा का अध्यक्ष चुना जाये।"

[अनुवाद]

सामयिक अध्यक्ष महोदय: श्री जार्ज फर्नांडीज प्रस्ताव का अनुमोदन करें।

[हिन्दी]

रेल मंत्री (श्री जार्ज फर्नांडीज): अध्यक्ष जी, मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[अनुवाद]

सामयिक अध्यक्ष महोदय: अब श्री लाल कृष्ण आडवाणी अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करेंगे।

एक माननीय सदस्य: वह यहां नहीं है।

श्री कमलनाथ (छिंदवाड़ा): श्री आडवाणी सभा में उपस्थित नहीं है तो क्या भारतीय जनता पार्टी प्रस्ताव वापस ले रही है? **(व्यवधान)** केवल प्रस्ताव का प्रस्तुतकर्ता ही प्रस्तुत कर सकता है—**(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्रीमती विजयाराजे सिंधिया (गुना): मैं प्रस्ताव करती हूं कि—**(व्यवधान)**

[अनुवाद]

श्री कमलनाथ: यह प्रस्ताव श्री आडवाणी ने प्रस्तुत करना है। उनके स्थान पर कोई अन्य सदस्य नहीं बोल सकता। क्या भारतीय जनता पार्टी इसका समर्थन करती है या इसका विरोध करती है? यह किसी सदस्य का मामला नहीं है बल्कि यह दल का मामला है! सीधी सी बात है, वह इसका समर्थन कर रहे हैं या इसका विरोध कर रहे हैं। **(व्यवधान)**

सामयिक अध्यक्ष महोदय: आडवाणी जी शहर से बाहर गए हुए हैं। इसलिए, उनके नाम से प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। अब श्री इन्द्रजीत गुप्त प्रस्ताव प्रस्तुत करें जो उनके नाम पर हैं।

श्री इन्द्रजीत गुप्त (मिदनापुर): मैं निम्नलिखित प्रस्ताव करता हूं:

"कि श्री रवि राय, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा का अध्यक्ष चुना जाये।"

सामयिक अध्यक्ष महोदय: श्री अमर राय प्रधान इस प्रस्ताव का समर्थन करें।

श्री अमर राय प्रधान (कूच बिहार): मैं, श्री इन्द्र जीत गुप्त द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

सामयिक अध्यक्ष महोदय: श्री देवी लाल द्वारा प्रस्तुत किया गया प्रस्ताव:

"कि श्री रवि राय, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा का अध्यक्ष चुना जाये।"

श्री शरद यादव द्वारा प्रस्तुत किया गया प्रस्ताव:

"कि श्री रवि राय, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा का अध्यक्ष चुना जाये।"

श्री इन्द्रजीत गुप्त द्वारा प्रस्तुत किया गया प्रस्ताव:

"कि श्री रवि राय जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा का अध्यक्ष चुना जाये।"

ये सभी प्रस्ताव सदन के समक्ष हैं अब मैं श्री देवी लाल द्वारा प्रस्तुत तथा श्री मनुभाई कोटाडिया द्वारा समर्थित पहला प्रस्ताव सभा के मतदान के लिए रखता हूं।

प्रश्न यह है:

"कि श्री रवि राय, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा का अध्यक्ष चुना जाये।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

सामयिक अध्यक्ष महोदय: प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ। मैं घोषणा करता हूं कि श्री रवि राय विधिवत इस सभा के अध्यक्ष चुन लिए गए हैं। अब मैं श्री रवि राय को सहर्ष आमंत्रित करता हूं कि वह आकर अध्यक्ष का आसन ग्रहण करें।

(प्रधान मंत्री, उप-प्रधान मंत्री, विपक्ष के नेता, श्री पी० उपेन्द्र, श्रीमती विजया राजे सिंधिया, श्री सोमनाथ चटर्जी तथा श्री इन्द्रजीत गुप्त श्री रवि राय को अध्यक्ष पीठ तक ले गए)

12.17 म० प०

[अध्यक्ष महोदय (श्री रवि राय) पीठासीन हुए]

अध्यक्ष महोदय को बधाइयां

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय: प्रधान मंत्री।

[हिन्दी]

प्रधान मंत्री (श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह): माननीय अध्यक्ष महोदय, लोक सभा के अध्यक्ष के इस गरिमामय पद पर आप सदन में सर्व सम्मति से जो सुशोभित हुए हैं, वह हम सब लोगों के लिए हर्ष का विषय है और हम आपको इस के लिए बधाई देते हैं।

साथ ही सभी दलों को, विपक्ष को भी मैं धन्यवाद देना चाहता हूं कि अध्यक्ष का चुनाव सर्व सम्मति से हुआ और सर्व सम्मति की जो यह नई चेष्टा और प्रयास है, मैं मानता हूं, उसका यह पहला कदम है कि, अध्यक्ष जी, आपका चुनाव हुआ। इस अवसर पर मैं सभी नव-निर्वाचित माननीय सदस्यों को भी बधाई देता हूं और उन का अभिनन्दन करता हूं।

मान्यवर, जन-जीवन में आपका लम्बा अनुभव और आपकी निजी सूझ-बूझ इस सदन का सम्बल है। छात्र जीवन में ही आप के हृदय में आजादी की आग लगी और स्वतन्त्रता का संघर्ष आपके जीवन का पर्यायवाची बन गया। जेल के सींखचे भी आप को अपने पथ से विचलित नहीं कर पाये। एक गम्भीर समाजवादी चिन्तक के नाते केवल अंग्रेजों को भगा देना ही आप का लक्ष्य नहीं रहा बल्कि उत्पीड़ित और शोषित वर्गों को न्याय दिलाना आप के जीवन का लक्ष्य रहा। और इसीलिए यह विश्वास होता है कि जो मेहनतकश हैं, जो गरीब हैं, अगर उनकी आवाज की धीमी भनक इस सदन में मिलेगी, तो आपके कान और आप का हृदय तुरन्त उसको ग्रहण करके उसको और भी सबल और ताकतवर बनाएगी।

मान्यवर, आपने राष्ट्रीय ध्वज आन्दोलन में जेल की यातनायें सही हैं। इस समय राष्ट्रीय ध्वज की मर्यादाओं को बनाए रखने की चुनौती है और आपके यहां पर पदासीन होने से उस लड़ाई में बल मिलेगा।

इन शब्दों के साथ मैं पुनः आपको बधाई देता हूं।

[अनुवाद]

श्री राजीव गांधी (अमेठी): अध्यक्ष महोदय, नौवीं लोकसभा के अध्यक्ष का पद ग्रहण करने पर मै आपको बधाई देता हूं। आप एक सांसद तथा स्वतंत्रता सेनानी के रूप में एक शानदार अनुभव के पश्चात इस पद पर पहुंचे हैं। आप इस सदन के नियमों और परम्पराओं से पूरी तरह वाकिफ हैं। हम आपको पूर्ण सहयोग का वचन देते हैं तथा इस सभा के सबसे बड़े दल के रूप में, इस लोकतांत्रिक संस्था को मजबूत बनाने में अपने दायित्वों का निर्वाह हम जिम्मेदारी से करेंगे।

हमारी एक छोटी सी शिकायत है। हमें बताया गया था कि आपके चुनाव के मामले में हमसे परामर्श किया जाएगा। दुर्भाग्यवश यह परामर्श, नामांकन के लिए निर्धारित समय से केवल 6 मिनट पूर्व कल सुबह 11 बजकर 54 मिनट पर किया गया।

सत्ता पक्ष के लोगों ने एक तरफा निर्णय किया था जबकि हमने इसे सर्वसम्मत निर्णय बना दिया।

महोदय, हम आपमें पूरा विश्वास व्यक्त करते हैं। हमें विश्वास है कि आप स्पष्ट और निष्पक्ष रूप से कार्य करेंगे। हम आपको लोकतंत्र तथा लोगों के अधिकारों का संरक्षक समझते हैं।

[हिन्दी]

श्रीमती विजयाराजे सिंधिया (गुना): आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आज की इस शुभ घड़ी में जबकि आप इस उच्च पद, गरिमामय पद को सुशोभित कर रहे हैं, इस अवसर पर आपको अपने हृदय से शुभ कामनाओं सहित बधाई प्रेषित करते हुए मुझे अपार आनन्द हो रहा है। यह विश्वास है कि आपके इतने लम्बे अर्से के संसद के अनुभव और जो राजनीतिक अनुभव हैं, उनका लाभ हम सब को इस सदन में अवश्य मिलेगा। अवश्य ही आप अपने गरिमामय पद का सदुपयोग करते हुए सदन को सब तरह से आप अपने सही निर्णय से अच्छी तरह से संचालित करते हुए हम सब को गौरावान्वित करेंगे।

मैं एक बार पुनः इस शुभ घड़ी में आपको हार्दिक बधाई और शुभ कामनायें देते हुए परमात्मा से प्रार्थना करती हूं कि आपको प्रभु शक्ति दें और आपको यशस्वी बनाये।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर): संसद में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से तथा अपनी ओर से लोक सभा जोकि इस देश का सर्वोच्च लोकतांत्रिक मंच है के अध्यक्ष के उच्चपद पर सर्वसम्मति से चुने जाने पर मैं आपको बधाई देता हूं।

हम में से बहुत से सदस्यों को, आपको उस समय से जानने का सौभाग्य प्राप्त है जब पहले आप इस सदन के सदस्य तथा केन्द्रीय मंत्री थे और हम उस समय आपकी सौम्यता तथा योग्यता और न्याय की भावना से प्रभावित थे। अब आपका संबंध सम्पूर्ण सदन से है तथा आप इस सदन तथा इसके सदस्यों के अधिकारों और विशेषाधिकारों के संरक्षक हैं। सदस्य के नाते हम इन अधिकारों और विशेषाधिकारों की रक्षा के लिए अत्यंत उत्सुक हैं और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके नेतृत्व में यह अधिकार और विशेषाधिकार सुरक्षित रहेंगे।

इस सदन के अध्यक्ष का पद न तो केवल सजावटी है और न ही यांत्रिक। आपको केवल इस सदन की कार्यवाही ही नहीं चलानी बल्कि यह भी सुनिश्चित करना है कि इसकी मर्यादा और गरिमा बनी रहे तथा सदस्यों को अपनी योग्यता के अनुसार इस देश के लोगों की सेवा करने का पूरा अवसर मिले। आप इस बात को स्वीकार करेंगे कि इस सदन के सदस्यों ने लोगों की आकांक्षाओं को अभिव्यक्ति देनी होती है तथा उनकी

समस्याओं का समाधान करना होता है। और मुझे विश्वास है कि इसके लिए उन्हें पूरा अवसर मिलेगा क्योंकि हमने देखा है कि चर्चा के अवसर नकारने से यदि युयुत्सा नहीं तो निराशा तो उत्पन्न होती ही है, जिससे बचा जाना चाहिए।

मैं एक बार फिर अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से आपको बधाई देता हूं तथा आपके कर्त्तव्यों के निर्वाह में अपना पूरा सहयोग देने का वचन देता हूं।

श्री इन्द्रजीत गुप्त (मिदनापुर): इस सभा के सर्वसम्मत निर्णय द्वारा इस उच्च पद पर आपके चुनाव के लिए मैं अपनी पार्टी की ओर से आपको हार्दिक बधाई देता हूं। आप एक पुराने स्वतंत्रता सेनानी तथा अनुभवी नेता ही नहीं हैं, अपितु, मेरा विश्वास है आप अपने सारे जीवन भर कुछ निश्चित समाजवादी सिद्धान्तों के प्रति वचनबद्ध रहे और हम आशा करेंगे कि आप इस सदन की कार्यवाही चलाने में भी उन्हीं सिद्धान्तों का पालन करेंगे जिनका अर्थ है कि आप किसी भी प्रकार के भेदभाव में विश्वास नहीं रखेंगे। आप को इस बात की गांरटी देनी होगी कि प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर प्रदान हों और इस महान देश में हमारे गरीब, वंचित, सताये हुए तथा शोषित व्यक्तियों के प्रतिनिधि के रूप में जो प्रतिनिधि चुनकर आए हैं, उनके माध्यम से उनकी आवाज को यहां सुना जाए। मुझे विश्वास है कि आप अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए इन सभी बातों को ध्यान में रखेंगे और यह देखेंगे कि सभी सदस्यों के अधिकारों और विशेषाधिकारों का पर्याप्त रूप से संरक्षण हो। यह एक आसान कार्य नहीं है। इस समय सभा में विभिन्न दलों के सदस्यों की स्थिति इस तरह है कि इसमें आपको पर्याप्त कार्य-कौशल, धैर्य, विवेक दिखाना होगा और मुझे विश्वास है कि ये सभी गुण आप में पर्याप्त रूप से विद्यमान हैं। मुझे बताया गया है कि इस सभा के 337 के लगभग सदस्य नए हैं। अर्थात इससे पहले वे यहां पर सदस्य नहीं रहे हैं। लोक सभा के इतिहास में ऐसी स्थिति इससे पहले कभी नहीं रही है। अतः आपको उन सभी की ओर पर्याप्त ध्यान देना होगा और विशेषकर पीछे बैठने वाले यह महसूस कर सकें कि उन्हें यहां पर बोलने के लिए पर्याप्त समय दिया जाता है।

इसके अतिरिक्त एक शब्द मैं महिला सदस्यों के बारे में कहूंगा, मुझे यह कहते हुए खेद हो रहा है कि इस सभा में उनकी संख्या बहुत ही कम हो गई है। आठवीं लोक सभा में उनकी संख्या केवल 44 थी जोकि बहुत ही कम थी। अब उनकी संख्या कम हो कर 26 अथवा 27 रह गई है, जोकि मैं कहूंगा कि हमारी पार्टी सहित इस सभा में किसी के लिए अथवा किसी पार्टी के लिए कोई बहुत ही प्रशंसनीय बात नहीं है। लेकिन जो भी हो, वास्तव में हमारे व्यवहार और इस सभा में आपके संरक्षण द्वारा, हमारी महान जनता का प्रतिनिधित्व कर रहे सभी वर्ग के ये लोग ऐसा सुरक्षित महसूस करें कि कोई भी अपने को किसी प्रकार से यहां उपेक्षित महसूस न करे। अतः महोदय, मैं अपनी पार्टी की ओर से आपको एक बार फिर हार्दिक बधाई देता हूं। यह देखने के लिए कि इस सभा की कार्यवाही सही तरीके से चले हम आपको अपना पूर्ण सहयोग देंगे क्योंकि सभा की कार्यवाही विगत में ठीक नहीं रही थी और इसके बारे में देश से बाहर बहुत सी टिप्पणियां की गई थीं। मुझे यकीन है कि यदि हम सभी उन्हें सहयोग देंगे तो इस सभा को अपने पूर्व स्तरों और मर्यादा के मानदण्डों और उचित वातावरण में पुनः स्थापित किया जा सकता है, जिसमें वाद-विवाद का कुछ अर्थ होगा और चर्चा को लाभदायक ढंग से चलाया जा सकता है। मैं आपको सहयोग का आश्वासन देता हूं और मैं अपनी पार्टी की ओर से एक बार फिर आपको बधाई देता हूं। अपनी पार्टी की

श्री कादम्बुर एम० आर० जनार्दनन् (तिरुनेलवेली): अध्यक्ष महोदय, अखिल भारतीय अन्ना डी० एम० के० और तमिलनाडु की जनता की ओर से हम आपको बधाई देते हैं और इस उच्च पद पर आपके आसीन होने पर आपका स्वागत करते हैं, ऐसे अवसर पर मैं एक तमिल 'तिरुक्कुरल' कहना चाहता हूं:

[श्री कादम्बुर एम० आर० जनार्दनन]

"इडानई' इडानल इवानमुडीक्कुम एन राएन्धु'
अडामई अवानंकन विडल"

उस 'तिरुक्कुरल' का अनुसरण करते हुए इस महान सभा ने इस उच्च पद के लिए आप जैसे सही व्यक्ति का चयन किया है। महोदय हमें आशा है कि नए सदस्यों की ओर आप पर्याप्त ध्यान देंगे और उनकी बात सुनेंगे और आप हमारे द्वारा तथा कांग्रेस (इ०) के द्वारा तमिलनाडु की जनता की आवाज यहां सुनने का अवसर देंगे। इस स्तर पर, मुझे यह कहते हुए खेद है, जैसाकि श्री राजीव जी ने बताया है, अखिल भारतीय अन्ना डी० एम० के० पार्टी के नाते हमसे भी कल परामर्श नहीं किया गया था। जो भी हो, हम अखिल भारतीय अन्ना डी० एम० के० पार्टी और तमिलनाडु की जनता की ओर से आपका स्वागत करते हैं। महोदय, आपका धन्यवाद।

श्री नानी भट्टाचार्य (बरहामपुर): अध्यक्ष महोदय, शुरू में, इस उच्च पद पर सर्वसम्मति से चुने जाने पर मैं आपको बधाई दे रहा हूं। जैसाकि आप जानते हैं, हम काफी समय से एक दूसरे से परिचित रहे हैं, विशेषकर जब आप केन्द्रीय मंत्री थे और मैं पश्चिम बंगाल राज्य में मंत्री था। मैं आपके जीवन को अच्छी तरह जानता हूं और आशा करता हूं कि आप भारत में वर्तमान स्थिति को समझेंगे। हम इतिहास के एक बहुत ही कठिन दौर से गुजर रहे हैं और मेरे विचार में यह संसद भी विभिन्न समस्याओं पर विचार करेगी, जिन पर यहां वाद-विवाद, चर्चाएं आदि होंगी। मुझे आप पर पूर्ण विश्वास है कि आप इस सभा के सभी सदस्यों के साथ न्याय करेंगे चाहे वे बड़े अथवा छोटे किसी भी दल से सम्बन्ध रखते हों, जोकि इस महान सभा में लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। मैं इस सभा का अधिक समय नहीं ले रहा हूं। मैं रेवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी और वामपंथी मोर्चे के अन्य साथियों की ओर से आपको पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन देता हूं।

श्री चित्त बसु (बारासात): महोदय, इस महान सभा के अध्यक्ष के उच्च पद पर सर्वसम्मति से चुने जाने के अवसर पर मुबारकवाद देने में सदन के नेता, विपक्ष के नेता तथा इस सभा में अन्य गणमान्य साथियों के साथ साथ मुझे भी अत्यधिक प्रसन्नता हुई है। महोदय, जैसाकि आप जानते हैं, यह सभा हमारे देश में लोकतांत्रिक तरीके से चुनी गई उच्चतम प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था है। जैसाकि आप जानते हैं, यह सभा अपने आप में पूर्ण प्रभुसत्ता संपन्न है जोकि अन्ततः भारत की जनता है और जो अपनी विशालता और विविधता में भारतीय राष्ट्र की एकता प्रस्तुत करती है। आप इस महान सभा के अधिकारों और विशेषाधिकारों के संरक्षक हैं। आप इस सभा के प्रत्येक सदस्य के अधिकारों और विशेषाधिकारों के भी संरक्षक हैं। महोदय, हम जानते हैं कि आपको विशेषाधिकारों को बनाए रखने और हमारे देश की महान संस्था की प्रतिक्षण, मर्यादा और शिष्टाचार के संरक्षण के मामले में मुख्य भूमिका निभानी होगी और हमारा यह भी कर्तव्य है कि आपके नेतृत्व में और इस सभा के आपके अध्यक्ष पद के नेतृत्व में इस सभा की विगत और शानदार परम्पराओं को समृद्ध बनाए रखा जाएगा। और बीते वर्षों में पहले से बनाई गई समृद्ध परम्पराओं को सुरक्षित रखा जाएगा तथा उन्हें मजबूत किया जाएगा और नई तथा स्वास्थ्य परम्पराएं स्थापित की जाएंगी।

हम, सदस्य, देश में विभिन्न राजनीतिक विचार रखते हुए, देश की जनता की आशाओं और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। हमें जो आदेश मिला है उसके अन्तर्गत हमें अपने लोगों की शिकायतों को स्पष्ट करना होगा और जो बाहर जनता है जिनका कि हम यहां प्रतिनिधित्व करते हैं उनके अनुरोध, मनोभाव और विचारों को यहां प्रकट करना होगा। हमसे यह भी कहा गया है कि हम देखें कि जो जनादेश हमें मिला है उसका उचित तरीके से और प्रभावकारी तरीके से पालन किया जाए।

महोदय, मुझे विश्वास है कि इस सभा के कार्यपालन में आप हमारा मार्गनिर्देश करेंगे।

महोदय, मैं अपनी ओर से तथा अपनी पार्टी फारवर्ड ब्लाक की ओर से आपको पूर्ण सहयोग देने का वचन

देता हूं और आशा करता हूं कि आपके नेतृत्व में यह सभा विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में लोकतंत्र संचालन में उच्च परम्पराओं की स्थापना करेगी।

प्रो० सैफुद्दीन सोज़ (बारामूला): अध्यक्ष महोदय नौवीं लोक सभा के अध्यक्ष पद को सुशोभित करने के लिए मैं आपका स्वागत करता हूं और आने वाले दिनों में इस सभा की कार्यवाहियों को चलाने में अपना हार्दिक समर्थन देने का आश्वासन देता हूं। मैं इस विचार से सहमत हूं कि नौवीं लोक सभा के अध्यक्ष पद के लिए आपसे अच्छा और कोई व्यक्ति हो ही नहीं सकता था। महोदय, मैंने आपको बोलते हुए कभी नहीं सुना। लेकिन मुझे बताया गया है कि आपके सदन में न रहने और अध्यक्ष के पद पर चुने जाने से सभा को यह हानि रहेगी क्योंकि आप एक बहुत अच्छा वाद-विवाद करने वाले हैं। लेकिन मुझे आशा है कि आप अपने निर्णय देते समय आप अपने निर्देशों द्वारा उस हानि को पूरा कर देंगे।

अध्यक्ष महोदय, 'समाजवाद' शब्द मुझे सुनने में बहुत अच्छा लगता है। मैं उन पुरुषों और महिलाओं का आदर करता हूं जो पद-दलितों की बात करते हैं और जो उनके बारे में बोलते हैं, मैं उनको प्यार करता हूं और उनका सम्मान करता हूं। महोदय, आपका इस उच्च पद पर चुनाव सर्वसम्मति से हुआ है। इसके बारे में कोई सन्देह नहीं है। लेकिन भविष्य के लिए, महोदय, संसदीय कार्य मंत्री से मेरा यह विनम्र अनुरोध है कि ऐसे अवसरों पर यहां तक कि सबसे छोटे दल को भी अवश्य ही आमंत्रित किया जाए, चाहे परामर्श के लिए न सही बल्कि वास्तव में उन्हें यह सूचना देने के लिए ही आमंत्रित किया जाए कि क्या होने जा रहा है क्योंकि उससे वे और भी बंध जाएंगे और सही सूझबूझ से उसमें भाग ले सकेंगे। मैं नौवीं लोक सभा के अध्यक्ष के रूप में आपका हार्दिक स्वागत करता हूं।

श्री इब्राहीम सुलेमान सेट (मंजेरी): अध्यक्ष महोदय, अध्यक्ष पद पर निर्विरोध चुन लिये जाने पर मैं आपको बधाई देता हूं। आप एक जाने-माने स्वतंत्रता सेनानी हैं तथा आपने कारावास की यातना भी झेली है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आपने बड़े ही उत्साहपूर्वक राजनीतिक क्षेत्र में देश की सेवा की है। जहां तक लोक सभा का सम्बन्ध है, संविधान के अन्तर्गत इसे सर्वोच्च विधायिका का दर्जा दिया गया है और हमारा देश सबसे विशाल लोकतांत्रिक देश है। इन परिस्थितियों में आपको यह सुनिश्चित करना है कि भविष्य में यह लोकतांत्रिक संस्था अपनी सम्पूर्ण प्रतिष्ठा और अधिकार के साथ बरकरार रहे। आप पर इस सभा की प्रतिष्ठा तथा महान लोकतांत्रिक संस्था की रक्षा करने का भारी दायित्व है। पक्ष और विपक्ष के सभी दलों के अधिकारों के आप संरक्षक हैं। इसके साथ ही इस प्रतिष्ठित सभा में छोटे दलों को भी अधिकार प्राप्त है क्योंकि छोटे दलों का भी अपना एक अस्तित्व है और विभिन्न राष्ट्रीय मुद्दों पर उनकी अपनी विचारधारा है। इस सभा में उन्हें बोलने का पर्याप्त अवसर दिया जाना चाहिए और मैं चाहता हूं कि आप इस बारे में ध्यान दें। मैं यह कहूंगा कि अच्छा होता यदि इस विषय पर विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श किया जाता। कम से कम यह एक त्रुटि तो है ही। लेकिन मैं आशा करता हूं कि भविष्य में महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा करते समय सरकार विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श करेगी। मुझे खुशी है कि पंजाब की समस्या पर चर्चा करते समय उन्होंने हमें भी इसमें शामिल किया है। मुझे आशा है कि इस प्रकार की भावना बनी रहेगी और माननीय प्रधान मंत्री महोदय यह भी ध्यान रखेंगे कि हम भी राष्ट्र का एक हिस्सा हैं और हमें भी एक भूमिका निभानी है। यह बात हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए। मुझे और अधिक कुछ नहीं कहना है तथा मैं अध्यक्ष के रूप में आपकी सफलता की कामना करता हूं। मैं आशा करता हूं कि आप न्यायपूर्वक, मर्यादित ढंग से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे। यहां मुझे उर्दू की दो पंक्तियां याद आती हैं। इसमें कहा गया है:

[श्री इब्राहीम सुलेमान सेट]

[हिन्दी]

"हयात ले के चलो कायनात ले के चलो।
चलो तो सारे जमाने को साथ ले के चलो।।"

[अनुवाद]

यहां आप 'जमाने' शब्द की जगह 'एवान' लगा सकते हैं। आज यह सभा आपके साथ है और इस लोकतांत्रिक संस्था की सफलता के लिए हम आपके साथ सहयोग करेंगे।

श्री पी॰ सी॰ थामस (मुवत्तुपुजा): महोदय, भारतीय जनता की इस सर्वोच्च संस्था के इस उच्च पद पर निर्वाचित होने पर मैं आपको बधाई देता हूं। एक स्वतंत्रता सेनानी, एक समाज सुधारक, एक पक्के समाजवादी, एक सक्षम सांसद तथा एक कुशल प्रशासक के रूप में प्राप्त किया गया आपका अनुभव अध्यक्ष के रूप में इस सम्मानित सभा की अध्यक्षता करने के आपके कार्य को और ख्याति प्रदान करेगा। मैं कहना चाहूंगा कि आपमें वह गुण है जिसे कि यहां उल्लिखित अन्य सभी गुणों से उत्तम कहा जा सकता है अर्थात, आप वास्तव में एक सज्जन व्यक्ति हैं और सज्जन व्यक्ति ही एक कुशल पीठासीन अधिकारी होगा जैसा कि एक बार कार्डिनल न्यूमैन ने कहा था:

"सज्जन व्यक्ति वही है जो दूसरों को कोई कष्ट नहीं देता है।"

लेकिन मैं कहूँगा कि आप शायद इतने उदार न बन सको जिससे किसी व्यक्ति को कोई दुख हो। हम यह भली-भांति समझ सकते हैं क्योंकि ऐसा सिर्फ इस सभा के हित में तथा भारत की जनता के हित में ही किया जायेगा। महोदय, आप एक भद्र पुरुष हैं इसलिए मैं आपसे एक अनुरोध करना चाहूंगा: आप अनुजों के प्रति तथा इस सभा में आए नये सदस्यों के प्रति भी अधिक उदारता दिखायें।

मैं आपको पूर्ण सहयोग का वचन देता हूं। मैं अपने दल केरल कांग्रेस की ओर से निश्चित रूप से यह भी कहूँगा कि आपको बधाई देते समय कुछ बातें यहां कही गयी थीं। अध्यक्ष के सर्वसम्मत चुनाव के सम्बन्ध में मुझे सिर्फ एक बात कहनी है। यहाँ निश्चित रूप से आप निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं और हम सब आपका समर्थन करते हैं, चुनाव निर्विरोध हुआ है।

लेकिन जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है कि आम सहमति के लिये सरकार को कुछ उपाय करने चाहिएं। छोटे से छोटे दल की भी सलाह लेना शायद सभी के हित में होगा और शायद मेरी इस बात पर अधिक गौर किया जाना चाहिए क्योंकि यहाँ मैं सबसे छोटे दल — अपने दल का तथा अन्य दलों का जिनके शायद सिर्फ एक सदस्य हैं, का प्रतिनिधित्व करता हूं। **(व्यवधान)** निश्चित रूप से मेरे विद्वान मित्रगण कह रहे हैं कि मंत्री महोदय श्री के॰ पी॰ उन्नीकृष्णन भी मेरे साथ हैं क्योंकि उनके दल ने भी सिर्फ एक ही स्थान प्राप्त किया है।

महोदय, इस सभा का अध्यक्ष चुने जाने पर मैं फिर एक बार आपको बधाई देता हूँ।

***श्री वामनराव महाडीक** (बम्बई दक्षिण मध्य): अध्यक्ष महोदय, अपने दल शिव सेना की ओर से अध्यक्ष का पद भार सम्भालने पर मैं आपका अभिनन्दन करता हूँ और इस अवसर पर मैं अपने हृदय की भावनाएं तथा अपनी शुभ-कामनाएं प्रकट करता हूँ। यद्यपि मेरा दल छोटा है, इस अवसर पर मुझे बोलने की अनुमति देने के कारण मैं आपका आभारी हूँ। महोदय, आपके प्रख्यात पूर्वाधिकारियों ने बहुत

* मूल मराठी में दिये गये भाषण के अंग्रेजी अनुवाद का हिन्दी रूपान्तर।

ही अच्छे विनिर्णयों और उचित निर्णयों द्वारा एक परम्परा कायम कर दी थी, मुझे विश्वास है कि भविष्य में आप इन परम्पराओं को बनाये रखेंगे। हमारे महान देश के नागरिक देशभक्त हैं। लेकिन फिलहाल हमारे देश के समक्ष निर्धनता, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और मूल्य वद्धि की गंभीर समस्यायें हैं। इन समस्याओं का समाधान ढूँढने के प्रति हम कटिबद्ध हैं। यद्यपि हमारा दल छोटा है तथापि इन समस्याओं का सामधान करने के लिये हम दृढ़ निश्चयी हैं। मैं आशा करता हूँ कि यद्यपि हमारा दल छोटा है, तथापि हमें इन मुद्दों पर सभा में बोलने का अवसर दिया जायेगा। हम आशा करते हैं कि आप हमारा मार्ग दर्शन करेंगे जो कि हमें सभा के वाद विवादों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

महोदय, मुझे विश्वास है कि इस प्रतिष्ठित सभा के संरक्षक के रूप में आप हमारे हितों की पूरी रक्षा करेंगे और सभी मामलों में हमारा **मार्ग दर्शन** करेंगे। महोदय, अध्यक्ष के रूप में आपके कार्यकाल की सफलता की मैं कामना करता हूँ। इन शब्दों के साथ मैं आपनी बात समाप्त करता हूँ।

[हिन्दी]

श्री सुल्तान सलाउद्दीन ओवेसी (हैदराबाद): स्पीकर साहब, मैं आपके मुत्तफिक इन्तखाब पर अपनी और अपनी पार्टी इत्तहादुल मुसलमीन की तरफ से आपको मुबारकबाद पेश करता हूं। मुझे खुशी इस बात की है कि एक सोशलिस्ट इस असीम कुर्सी पर तशरीफ लाये हैं। आप इस बात से भी वाकिफ हैं कि हिन्दुस्तान के अन्दर जो कुछ भी हालात मुसलमानों के ताल्लुक में हो रहे हैं, मैं उम्मीद करता हूं कि आप ज्यादा से ज्यादा उस पर गौर करेंगे क्योंकि 40 बरस से हम लुटते हुए आ रहे हैं और मुझे तवक्को है कि आप उन हालात का इज़हार करने के लिये मुझे पूरा-पूरा मौका देंगे। आप खुद डा० लोहिया के पैरोकार हैं और मुझे याद आता है जो उन्होंने उन दिनों किया। मैं आपका मशकूर हूं कि आपने मुझे मौका दिया।

جناب سلطان صلاح الدین اویسی (حیدر آباد) : اسپیکر صاحب - میں
آپ کے متفقہ انتخاب پر اپنی اور اپنی پارٹی اتحاد المسلمین کی طرف
سے آپکو مبارکباد پیش کرتا ہوں - مجھے خوشی اس بات کی ہے کہ ایک
سوشلسٹ اس عظیم کرسی پر تشریف لائے ہیں - آپ اس بات
سے بھی واقف ہیں کہ ہندوستان کے اندر جو کچھ بھی حالات مسلمانوں
کے تعلق میں ہو رہے ہیں میں امید کرتا ہوں کہ آپ زیادہ سے زیادہ
اس پر غور کریں گے کیونکہ چالیس برس سے ہم لٹتے ہوئے آ رہے
ہیں اور مجھے توقع ہے کہ آپ ان حالات کا اظہار کرنے کے لئے مجھے
پورا پورا موقع دیں گے - آپ خود ڈاکٹر لوہیا کے پیروکار ہیں اور مجھے
یاد آتا ہے جو انہوں نے ان دنوں کیا - میں آپ کا مشکور ہوں کہ
آپ نے مجھے موقع دیا -

श्री शंकरजी लक्ष्मणजी वाघेला (गांधीनगर) : माननीय अध्यक्ष जी, आपको नवीं लोक-सभा के अध्यक्ष के गरिमा के पद पर विराजमान देखकर मैं नये सांसदों की ओर से, जो इस खम्भे के पीछे, छत के नीचे, अन्धेरे में छिपे बैक-बैंचर्स हैं, उन सांसदों की ओर से आपको बधाई देता हूं।

आप श्री जयप्रकाश नारायण की मूवमैंट में साझीदार रहे और डा० लोहिया जी के भी शिष्य रहे। लोहिया जी को कन्ट्रोल करने के लिये उस टाइम के अध्यक्ष-पद पर जो अध्यक्ष जी बैठते थे उनको भी बहुत मुश्किलात रहती थीं। लोहिया जी के प्रसंग में देखते हुए, क्योंकि आप भी लोहिया जी के अनुयायी रहे हैं, अगर लोहिया जी जैसा व्यवहार यहां पर होता है, न्याय के लिये और सामान्य आदमियों की लड़ाई के लिये तो आप जरूर हमको बेयर करेंगे। श्री जयप्रकाश नारायण के दिनों में सन् 1977 में इस हाउस में आपके साथ काम करने का हमारा सौभाग्य रहा है, उन दिनों में आपने नारा लगाया था कि "सिंहासन खाली करो, जनता आती है", तो आज आप उस आसन पर विराजमान हैं, जिसके ऊपर 4, 4 सिंह, लायन लगे हुए हैं, जिनके नीचे आज आप बैठे हैं, तो आपके उस नारे कि "सिंहासन खाली करो" की याद कर के हमें आशा है कि आप जे० पी० का स्वप्न पूरा करायेंगे हमारे माध्यम से और सरकार के माध्यम से।

मैं आपसे उम्मीद करूंगा, आप कलरफुल हैं या नहीं मुझे पता नहीं, लेकिन आज ममता जी नहीं हैं, माला जी हैं तो हमारी बहिनों की ओर से मैं कहूंगा कि उनका भी विशेष ख्याल करिए। आठवीं लोक-सभा के मुकाबले में आज उनकी कम संख्या यहां पर है लेकिन इनको भी यहां बोलने का मौका मिले और हम सबको भी। बहिनों की जो 50 फीसदी के हिसाब से राष्ट्र की संख्या है, उनकी बात को ध्यान में रखकर उन्हें विशेष सहयोग दें।

मैं उस राज्य से आता हूं जहां से सरदार वल्लभभाई पटेल के बड़े भाई विट्ठल भाई पटेल इसी आसन पर विराजमान होते थे जब-जब भी राष्ट्र के हिसाब से आप सोचने लगें और जब हाउस को कंट्रोल करना हो तो उनकी तस्वीर आपको हाउस को कन्ट्रोल करने में मदद देगी। उनकी तस्वीर ठीक आपके सामने लगी हुई है और जब आप बैठे रहें तो उनकी ओर देखते हुए उनके अनुसार संसद आपके सामने रहेगी। उन विट्ठल, भाई पटेल का सम्मान कर के इस हाउस की जो परम्पराएं रही हैं उनका ध्यान रखते हुए आप सब बातों पर ध्यान देंगे, ऐसी आशा है।

इन शब्दों के साथ हमारे बैक बैंचर्स को जो आपसे नजर मिलाने के लिये ऊंची आवाज करनी पड़ती है, तो आप नजदीक में ही न देखकर, दूरी का चश्मा लगाकर हमको देखते रहेंगे, इसी के साथ मैं आपको धन्यवाद करता हूं।

श्री महादेव राव शिवंकर (चिमूर): माननीय अध्यक्ष जी, हम आपका अभिनन्दन करते हैं, स्वागत करते हैं। मैं नये सदस्यों की ओर से बोल रहा हूं, हम प्रायः विधान सभाओं में यह देखते आये हैं कि जो पुराने सदस्य होते हैं, उनकी ओर ही अध्यक्ष महोदय का ध्यान विधान-सभाओं में जाता है और जो नये सदस्य होते हैं उनकी ओर ध्यान नहीं जाता है। माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बात लोक-सभा में नहीं होगी, ऐसा हमें पूरा विश्वास है।

कई विषय ऐसे हैं जो अत्यन्त राष्ट्रीय महत्व के हैं जैसे किसानों का कर्जे से मुक्त होना, आरक्षण का विषय, पंजाब और कश्मीर की सुरक्षा का विषय। इन सारे विषयों पर हम नये सदस्यों को भी अपने विचार व्यक्त करने के लिये मौका देने के लिये आपका ध्यान जरूर जायेगा। हम आपका ध्यान आकर्षित करने का प्रयत्न करेंगे। हो सकता है बुजुर्ग सदस्य आपका ध्यान अधिक आकर्षित करें,

लेकिन नये सदस्य होने के कारण और पीछे बैठे होने के कारण आप हमें अधिक से अधिक बोलने का अवसर दें। इतना ही कहते हुए मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आपका कार्यकाल सुचारू रूप से चले और इस देश में एक नई लकीर खींची जाये।

ये शुभकामनायें देते हुए सभी नये सदस्यों की ओर से आपका अभिनन्दन करते हुए अपने दो शब्द समाप्त करता हूं।

डा० खुशाल परशराम बोपचे (भन्डारा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आज जिस खुशी के साथ आपका चुनाव हुआ है, चयन हुआ है, इस महत्वपूर्ण गरीमापूर्ण खुशी के लिये हम सभी नये युवा सदस्य आपका अभिनन्दन करते हैं और स्वागत करते हैं। हम लोग इस देश के ऐसे पिछड़े हुए कोने से आये हुए हैं जहां पर इस देश का युवा वर्ग, किसान और मजदूर बड़ी संख्या में रहता है। उन सब की आवाज हम इस सदन के अन्दर रखने का प्रयास करेंगे, मगर नये सदस्य रहने की वजह से शायद हम लोगों का आप लोगों को ज्यादा ध्यान रखना पड़ेगा। साथ ही हम बैठते भी काफी पीछे हैं। आप अपनी दृष्टि अवश्य ही इतनी लम्बी रखें जिससे कि इस सदन के नये युवा सदस्यों को शिकायत करने का मौका न मिल सके।

बेरोजगारी की आवाज इस सदन के अन्दर उठा कर हम अवश्य ही बेरोजगारी को हल करने का प्रयास करेंगे। आशा है इसमें आपका भी सहयोग मिलेगा। इन्हीं अपेक्षाओं के साथ हमारे युवा नये सम्मानित सदस्य कई अपेक्षायें लेकर बैठे हुए हैं। आप उन अपेक्षाओं की उपेक्षा न करें। ऐसी आकांक्षाओं के साथ आपको फिर से धन्यवाद देते हुए बधाइं देता हूं और अपने चन्द शब्द समाप्त करता हूं।

श्री हरिभाऊ शंकर महाले (मालेगांव) : अध्यक्ष जी, अध्यक्ष बनने के लिये मैं आपको बधाई देता हूं। आप पहले आजाद पंछी थे लेकिन अब आप पिंजरे में बैठे हैं। लोक सभा एक मंदिर है। इस मंदिर की रक्षा करने की आपके ऊपर जिम्मेदारी है।

देश में अनुसूचित जाति और जन जाति की आवाज 15 करोड़ है जिन की रक्षा करना आपके हाथ में है। इसके साथ ही किसानों की रक्षा करने के लिये भी हमें आपकी जरूरत है। आप इस तरफ अवश्य ही ध्यान दें।

आपने मुझे बोलने का जो मौका दिया उसके लिये आपको धन्यवाद देता हूं और एक बार फिर आपको बधाई देता हूं।

[अनुवाद]

श्री इन्द्रजीत (दार्जिलिंग) : अध्यक्ष महोदय, अध्यक्ष के इस गरिमापूर्ण पद पर आपके सर्वसम्मत चुनाव पर मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूँ। अपनी तरफ से तथा गोरखा राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा, जिसका मैं इस सभा में प्रतिनिधित्व करता हूँ, की ओर से यहाँ अन्य सभी मित्रों द्वारा आपको दी गई बधाइयों में मैं शरीक हूँ।

अध्यक्ष महोदय, मैं इस महत्वपूर्ण समारोह को पिछले 35 सालों से एक दर्शक के रूप में देखता आ रहा हूँ। इस संसद के कार्यकरण तथा काफी अरसे से हो रहे इसके पतन पर मुझे बहुत कुछ कहना है। परन्तु मैं अपने विचार अपने प्रथम भाषण में व्यक्त करूंगा। फिलहाल, मैं एक बार फिर आपको हार्दिक बधाई देता हूँ और हमारे प्रजातन्त्र के इस सर्वोच्च मन्दिर की प्रतिष्ठा हेतु अपना पूर्ण सहयोग प्रस्तुत करता हूँ।

1.00 म॰ प॰

सूचना और प्रसारण मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री (श्री पी॰ उपेन्द्र) : महोदय, अध्यक्ष के रूप में आपके सर्वसम्मति से चुनाव पर मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूँ। हम कई वर्षों से एक दूसरे से परिचित हैं और शायद हम एक ही वैचारिक पृष्ठभूमि के भागीदार हैं।

महोदय, संसदीय कार्य मंत्री तथा मुख्य सरकारी सचेतक होने के नाते मैं अपनी ओर से आपको पूर्ण सहयोग का विश्वास दिलाता हूँ। मुझे विश्वास है कि अपने संयमी तथा दृढ़ ढंग से आप सभा का संचालन सहज रूप से कर पायेंगे।

मैं विशेष रूप से विपक्ष के नेता, माननीय राजीव गांधी का शुक्रिया अदा करता हूँ कि उन्होंने आज आपके सर्वसम्मत चुनाव में मदद की है। यह एक शुभ शकुन है। मुझे विश्वास है कि यह सद्भावना का माहौल जारी रहेगा और सभा का संचालन सच्ची प्रजातान्त्रिक परम्पराओं के साथ सहज रूप से होगा।

इस समय मैं ऐसी कोई विवादास्पद बात नहीं कहना चाहता जो इस अवसर के महत्व तथा सद्भावना के माहौल को बिगाड़ दे। परन्तु मैं एक बात स्पष्ट करना चाहता हूँ। विपक्ष के नेता ने सरकार द्वारा अपनाई गई परामर्श प्रक्रिया के बारे में एक छोटी सी टिप्पणी की है। महोदय, मैं विपक्ष के नेता को याद दिलाना चाहता हूँ कि जब मैं इस महीने की 12 तारीख को उनके निवास पर मिलने गया था उनसे उनका सहयोग मांगा था, तो मैंने अध्यक्ष के चुनाव के बारे में भी जिक्र किया था; मैंने दो या तीन नामों का जिक्र किया था जो उस समय हमारी ओर से विचाराधीन थे और उन्होंने उन नामों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने से मना कर दिया था। फिर 17 तारीख की शाम को जब मैं उनसे एक अन्य अवसर पर मिला और जब उन्होंने अध्यक्ष का प्रश्न उठाया तो मैंने उनसे विशेष रूप से पूछा था कि क्या उनके पास इस विषय पर कोई सुझाव है। माननीय विपक्षी नेता ने कहा था कि उन्होंने इस विषय पर कोई विचार नहीं किया है और इसलिए मैंने यह समझा था कि सत्तापक्ष द्वारा चुने गये व्यक्ति के सर्वसम्मति से चुनाव में वे मदद करेंगे। इसलिए मैंने अपने पक्ष के पसंद के व्यक्ति का नामांकन भरने से पहले उन्हें सूचित करने की मर्यादा का पालन किया था। मेरे विचार में हमने कोई अनुचित व्यवहार नहीं किया है, परन्तु मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ कि परामर्श की प्रक्रिया पहले की अपेक्षा कहीं अधिक होगी। मैं उन्हें विश्वास दिला सकता हूँ कि सभी महत्वपूर्ण मुद्दों पर मैं उन्हें विश्वास में लूँगा और उनका सहयोग मागूंगा।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : मैं सभा की अनुमति से पहले कुछ शब्द हिन्दी में तथा बाद में कुछ शब्द अंग्रेजी में कहना चाहूंगा।

इस महान पद पर सर्व-सम्मति से निर्वाचित करने का जो सम्मान आप सब ने मुझे प्रदान किया है, इसके लिए मैं आप सब का आभारी हूं। मैं इस महान पद के कर्तव्यों का विनम्रता और पूरी निष्पक्षता से पालन करने का प्रयास करुंगा। मैं सदस्यों को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि मैं जब तक इस पद पर रहूंगा, तब तक दलगत राजनीति से पूरी तरह दूर रहूंगा। मैं इस से पहले इस महान पद को सुशोभित करने वाले सभी प्रतिभाशाली व्यक्तियों द्वारा स्थापित उच्च आदर्शों का पालन करने का प्रयत्न करुंगा।

इस अवसर पर मैं आप को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि इस सभा के प्रवक्ता और सेवक के रूप में, मैं केवल वही विचार प्रकट करुंगा, जो इस सभा की आम राय होगी। मुझे विश्वास है कि मुझे इस सभा की कार्यवाही चलाने में आपका पूर्ण सद्भाव, सहयोग और मार्गदर्शन प्राप्त होगा ताकि यह सभा भारत के जनमानस द्वारा, जो सर्वोपरि है, उसमें व्यक्त किए गए विश्वास की कसौटी पर खरी उतरे।

[अनुवाद]

हमारा लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और पूरे विश्व की निगाहें हमारे ऊपर लगी हुई हैं। अभी हाल में हुए चुनाव ने हमारे लोकतंत्र की आन्तरिक शक्ति और लोकतांत्रिक मूल्यों में हमारी जनता की अगाध आस्था सिद्ध कर दी है। मुझे विश्वास है कि हम मतदाताओं द्वारा व्यक्त की गई आस्था को पूरा कर सकेंगे।

हमें यह याद रखना चाहिए कि यह सभा 75 करोड़ भारतवासियों की सर्वोच्च प्रतिनिधि सभा है। अतः इसे न केवल आम लोगों की आशायें, आकांक्षायें और अपेक्षायें ही, अपितु उनका दुख-दर्द भी प्रतिबिम्बित करना चाहिये।

हमें यह कदापि नहीं भूलना चाहिये कि लोक सभा एक ऐसा मंच है, जहां, अनुशासन में रहकर वाद-विवाद होता है। हमें अपने भाषणों में तर्क बुद्धि का सहारा लेकर अपने सहयोगियों को अपने विचारों से सहमत कराना चाहिये। तर्कशील और सटीक वाद-विवाद ही संसद की कार्यवाही का मूलाधार है। मैंने सदैव यह माना है कि राष्ट्र के सजग प्रहरी के रूप में लोक सभा को जनमानस का झकझोरने वाले सभी विषयों पर चर्चा करने का पूरा-पूरा अवसर मिलना चाहिए।

मेरे प्रख्यात पूर्वाधिकारी, श्री जी० वी० मावलंकर के शब्दों में :

> "विधानमंडल मूलतः विचारक संस्थायें तथा लोगों के प्रतिनिधि हैं; वे उन सामान्य प्रणालियों पर विचार करते हैं या बहस करते हैं, जिन पर वे देश की सरकार को चलाना चाहते हैं और इस उद्देश्य हेतु उनके पास कानून बनाने का अधिकार भी है—एक तरह से उनका आशय शान्तिपूर्ण तथा क्रमिक विकास शुरु करना है अथवा यदि आप यह कहना चाहें, समाज में तथा सरकार में क्रांति लाना है—इसलिए वास्तविक प्रजातन्त्र हेतु किसी को केवल संविधान के प्रावधानों या विधानमंडलों में कार्यवाही संचालन के नियमों तथा विनियमों को ही नहीं देखना चाहिए, परन्तु उन लोगों में, जिनको मिला कर विधानमंडल बनता है, वास्तविक प्रजातान्त्रिक प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना चाहिए"।

मेरा सभी दलों तथा व्यक्तिगत सदस्यों को सामान्य रूप से प्रमुख सार्वजनिक महत्व के राष्ट्रीय मुद्दों तथा विशेष रूप से उनके निर्वाचन क्षेत्र के मतदाताओं के मुद्दों को उठाने हेतु अवसर देने का प्रयास रहेगा। मैं आप सभी से केवल यही निवेदन करता हूं कि सभा की कार्यवाही के सुव्यवस्थित तरीके से संचालन में मुझे सहयोग दें।

संसदीय प्रक्रिया अपरिवर्तनीय चीज नहीं है। यह एक महान लक्ष्य तक पहुँचने का साधन है। यदि आवश्यक हो तो हम अपने कुछ नियमों तथा विनियमों पर फिर से गौर कर सकते हैं। त्वरित, सुव्यवस्थित तथा प्रभावी ढंग से कार्यवाही के सम्पादन को सुनिश्चित करने की दृष्टि से हमारी नियम समिति इस विषय में गौर कर सकती है।

पर्यावरण तथा वन, कृषि तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभागों के कार्य की लगातार तथा साथ-साथ संवीक्षा करने तथा उनके द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले विधायी प्रस्तावों की जाच करने के लिए स्थायी संसदीय विषय (सब्जेक्ट) समितियों की स्थापना करने की दिशा में शुरूआत की जा चुकी है। यदि यह प्रयोग संतोषजनक साबित हुआ और यदि आप सभी सहमत हुए तो अन्य विभागों के लिए भी ऐसी समितियों का गठन किया जाएगा। इस प्रयोग से कार्यपालिका की लोक सभा के प्रति जवाबदेही का सिद्धांत वास्तव में लागू होगा।

[अध्यक्ष महोदय]

मुझे इस प्रतिष्ठित पद के माध्यम से राष्ट्र की सेवा करने का अवसर देने हेतु मैं एक बार फिर आप सभी का शुक्रिया करता हूँ।

राष्ट्रपति के अभिभाषण के आधा घंटे बाद कल 20 दिसम्बर, 1989 को पुनः समवेत होने तक के लिए सभा स्थगित होती है।

1.09 म०प०

तत्पश्चात् लोक सभा बुधवार 20 दिसम्बर 1989/29 अग्रहायण, 1911 (शक) को राष्ट्रपति के अभिभाषण के आधे घंटे बाद तक के लिए स्थगित हुई।